Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
January 2026
ISSN 2229-3388

सामाजिक न्याय के अग्रदूत के रूप में ज्योतिबा फूले का योगदान (1827ई०–1890ई०)

उपेन्द्र कुमार[1], डॉ. सत्य प्रकाश राय[2]
शोधार्थी[1] विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी आर अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार
सहायक प्राध्यापक[2] विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी आर अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

शोध सारांश

महात्मा ज्योतिबा फूले भारत में सामाजिक न्याय के अग्रदूत थे। उन्होंने निम्नजाति, शुद्र, अति शुद्र और महिलाओं के सर्वांगीण विकास, शिक्षा तथा समान अधिकार के लिए संघर्ष किया। सत्यशोधक समाज उनके द्वारा स्थापित संस्था थी। उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों को गुलामगिरी नामक पुस्तक में लिपिबद्ध किया। नारी शिक्षा तथा विधवाओं की दशा में सुधार के लिए उन्होंने कई सार्थक प्रयास किये। उन्होंने ब्राह्मणवादी सामाजिक संकीर्णताओं, जातिवाद और वर्णवाद के पोषक शास्त्रीय विषयों और ग्रंथों का कड़ा विरोध किया। उनका प्रयास शोषणमुक्त समानता पर आधारित समाज का निर्माण करना था। उनकी विचारधारा, सिद्धान्त संकल्पनाएँ और परिवर्तन के लिए उठाये गये कदम आगे के समाज सुधार आन्दोलनों के लिए प्रेरक तथा शिक्षाप्रद बन गये।

विशिष्ट शब्द

महात्मा फूले, ज्योतिबा, सामाजिक न्याय, दलित शुद्र, अति शुद्र, नारी अधिकार, नारी शिक्षा ब्राह्मणवाद, विधवा विवाह, निम्न जाति आंदोलन, समाज सुधारक, जाति, लिंग, राष्ट्रवाद, समानता, वंचित वर्ग

उन्नीसवीं सदी भारत के आधुनिकीकरण की सदी के रूप में प्रस्तुत की जाती है। भारत में शुरू होने वाले सुधार आन्दोलनों को दो वर्गों में रख कर विचार किया जाता है। इनमें प्रथम अग्रेजों के द्वारा किये जाने वाले सुधार कार्य है जिनका उद्देश्य प्रशासन की कठिनाईयों को दूर करना था तथा ईसाई मिशनरियों का प्रचार–प्रसार करना था। भारतीयों के लिए यह आत्म मंथन का समय था। विचारणीय था कि भारत के परंपरागत समाज में क्या–क्या कमी है जो अंग्रेजी समाज और सत्ता के लिए आलोचना और निन्दा का विषय है। अंग्रेजी सत्ता की भारत में स्थापना के साथ ही विकास और विज्ञान का नया दौर प्रारंभ हुआ भारतीयों की आलोचना और निन्दा में यह अवश्य कहा जाता था कि भारत का समाज अविकसित परंपरागत रूढ़ियों से जकड़ा हुआ तथा कई मायनों में असभ्य है। इन स्थापनाओं के साथ–साथ यह भी कहा गया कि इन असभ्य जातियों को सभ्य बनाये जाने की जिम्मेदारी युरोप के गोरे लोगों पर है। इस विचार को सिद्धान्त के रूप में अंग्रेज दार्शनिक विचारक और साहित्यकार रूडयार्ड किपलिंग ने ढाला। [1]

इस विचारधारा ने उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद को नैतिक आधार दे दिया। इसने यह समझाने की कोशिश की उपनिवेशवाद दुनिया के पिछड़े देशों को विकसित बनाये जाने की एक प्रक्रिया है। इसमें अविकसित देश पर विकसित देश अधिकार कर उसके विकास के लिए प्रयास करता है। परंतु सच्चाई यह थी कि उसे अविकसित साबित करके उस देश और जाति के आत्मविश्वास को तोड़ने का काम किया गया। वह इस प्रकार का आर्थिक तथा राजनीतिक शिकंजा तैयार करता था जिसमें उस देश के संसाधनों का मनमाना शोषण किया जा सके। शोषण का दुसरा पक्ष सांस्कृतिक पक्ष था। ईसाई मिशनरियों को खुली छुट थी। वे भारत में खुलेआम हिन्दू देवी–देवता का मजाक उड़ाते थे तथा पूजा पद्धति और विचार पद्धति को अनावश्यक तथा अतार्किक बताते थे। भारत में इसकी प्रतिक्रिया तीन तरह से हुई पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को श्रेष्ठतर मान लिया गया तथा भारतीय परंपराओं का त्याग कर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया जाने लगा। दुसरी प्रतिक्रिया में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से दूरी बनाने की अपील की गई तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति को श्रेष्ठ बताया गया। विचार के इस आयाम ने पौर्वात्य संस्कृति पर गर्व करने वाले आत्मविश्वासी तथा राष्ट्रभक्त युवाओं का एक वर्ग तैयार किया जो भारतीय संस्कृति सनातन परंपरा, साहित्य और धर्म ग्रंथों से श्रेष्ठता के तत्वों का अवगाहन करने लगे। तीसरी प्रतिक्रिया के तहत भारतीयों में कई सुधारक निकले जिन्होनें भारतीय समाज की कमियों को स्वीकार किया। इन सुधारको ने न तो ऑख मूँद कर पश्चिमी विचारधारा को स्वीकार किया और न हीं भारतीय समाज की कमियो को नजरअंदाज किया।

उनकी दृष्टि संतुलित थी उन्होंने भारतीय परंपराओं विचार और समाज की कमियों को स्वीकारा भी तथा उसमें सुधार और समाधान के लिए आवश्यक प्रयास भी किये। इन सुधारकों में राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, एम०जी० रानाडे, दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द के साथ–साथ महात्मा ज्योतिबा फूले का नाम भी आता है।

ज्योतिबा फूले का जन्म महाराष्ट्र के एक माली परिवार में 11 अप्रैल 1827 को सतारा जिले में हुआ था।[2] उनका परिवार हिन्दू समाज की निम्नजाति से आता था। उनका मुख्य पेशा फूल बेंचने का था। उनकी जाति को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का हक नहीं था। अतः उन्हें बीच में स्कूली शिक्षा छोडना पडा। इसे उन्होंने पुनः 21 वर्ष की अवस्था में स्कॉटिश मिशन स्कूल से पूरा किया। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजी में सातवीं तक की पढाई पुरी की। 1840 ई० में उनका विवाह स्वजातीय लडकी सावित्री बाई फूले से हुआ। बाद में सावित्री बाई फूले भी महान समाज सेविका बनी।[3] 1848 ई० में एक विवाह भोज समारोह में उन्हें निम्न जाति का होने के कारण अपमानित होना पडा। इस घटना ने उनके जीवन की दशा और दिशा बदल दी। वे समाज उत्थान की राह पर चल पड़े। उन्होंने नारी शिक्षा, नारी स्वास्थ्य, नारी जागरण, बाल विवाह पर रोक, विधवा विवाह तथा अछूत और निम्नजातियों के उत्थान के लिए काम करना प्रारंभ किया।[4] उनकी सहधर्मिणी उनकी पत्नी ने उनकी इस पावन पुनीत कर्तव्य में उनका साथ दिया। उन्होंने विधवा विवाह के साथ–साथ विधवाओं के संतानों को गोद लेने को प्रोत्साहित किया। वे स्वंय निसंतान थे। उन्होंने एक विधवा के बच्चे को गोद लिया था। उन पर थॉमस पेन के *'राइट्स ऑफ मेन'* का असर विद्वान स्वीकार करते है। ऐसा माना जाता है कि डॉ० बी० आर० अम्बेदकर के विचार महात्मा ज्योतिबा फूले के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने बिना ब्राह्मण के विवाह संस्कार सम्पन्न कराने की प्रथा प्रारंभ कराई जिसको बाद में बंबई हाई कोर्ट ने मान्यता भी दी।

ज्योतिबा फूले बहुआयामी व्यक्तित्त्व के स्वामी थे। वे एक समाज सुधारक ही नहीं बल्कि एक दार्शनिक, व्यवसायी, राजनेता और लेखक भी थे। उन्होंने कई महत्वपूर्ण किताबों की रचना की। इनमें गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी अछूतों की कैफियत तथा किसान का कोडा महत्त्वपूर्ण है। महात्मा फूले 1876 से 1883 तक पूणे म्यूनिसपल के कमिश्नर रहे। वे कृषक कल्याण के लिए भी काम करते रहे उन्हीं के प्रयासों से तत्कालीन सरकार ने कृषि कानून पारित किया। 1880 में मुम्बई में आयोजित एक सभा में श्री विठ्ठलराव कृष्ण जी वंडेकर ने उन्हें महात्मा की उपाधि दी। डॉ अम्बेदकर ने उन्हें बुद्ध और कबीर के साथ तीसरा गुरू माना। अंतिम समय में उन्होंने अपनी सम्पति का मात्र दस प्रतिशत अपने पुत्र को दिया बाकी सम्पत्ति को उन्होंने समाज सेवा, उत्थान और कल्याण में लगा दिया।

फूले भारतीय समाज में मौलिक परिवर्तन चाहते थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज में श्रमिक वर्ग की अधिसंख्या है। अतः उन्हें ब्राह्मणों के द्वारा स्थापित व्यवस्था में समानता पर आधारित जातिविहिन विवेकपूर्ण न्यायी समाज की स्थापना की संभावना कम लगती थी। उन्होंने जातिविहिन सामाजिक न्याय पर आधारित समाज की स्थापना के लिए 1873 ई० में सत्य शोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने भारतीय समाज में समानता का लक्ष्य रखा। इस संगठन का मूल लक्ष्य सभी मनुष्यों के बीच समानता का प्रसार सत्यों का प्रचार तार्किक और सही दिशा में सोच को प्रचारित करना। उन्होंने संगठन के माध्यम से अधिकारों, सामाजिक कुरीतियों तथा बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाया। उन्होंने संगठन के माध्यम से शूद्रों की शिक्षा का प्रचार कराया। वे शूद्रों तथा महिलाओं को समाज के मुख्य धारा में लाना चाहते थे।[5]

ज्योतिबा फूले अपनी माता–पिता के इकलौता संतान थे। उनके जन्म के साथ ही उनकी माता का देहावसान हो गया। पिता ने दुसरा विवाह नहीं किया बल्कि एक नौकरानी को रखा। उस नौकरानी ने माता के समान फूले की देख–भाल की। फूले बहुत नजदीक से ब्राह्मणवादी व्यवस्था की बुराई को देखते थे और महसूस किया करते थे। इस वजह से वे उग्र सुधारक बन गये। वे ईसाई मिशनरी के प्रशंसक थे। ईसाई मिशनरी मानव धर्म का पालन करते थे। वे शूद्रो, शूद्रातिशूद्रों और महिलाओं के उत्थान के लिए ईसाई मिशनरी के कार्य की प्रशंसा करते थे। ज्योतिबा फूले ने पाया कि मराठा ब्राह्मण व्यवस्था में निम्नजाति, शूद्रों और महिलाओं के लिए अत्यंत दुःखद स्थिति थी। छत्रपति शिवाजी ने मराठा स्मिता को एक नई पहचान दिया। लेकिन पेशवा बाजीराव द्वितीय (1796–1818) के काल में ब्राह्मणों का वर्चस्व बढ गया। ब्राह्मणवादी व्यवस्था में शूद्रों, शूद्रातिशूद्र तथा महिलाओं की दशा दयनीय हो गई। शूद्रों को आगे मिट्टी का बर्तन लटका कर तथा पीछे झाडु बाँध कर चलना पडता था।

यह सब अत्यंत अपमानजनक था तथा उन्हें समाज की मुख्य धारा से अलग पहचान देने का प्रबंध था। ज्योतिबा फूले की दृष्टि में महिला चाहे वह किसी जाति की हो उसे समाज में दोयम दर्जे का स्थान ही प्राप्त था। वह घर की दहलीज लाँघ नहीं सकती थी। उन्हें शिक्षा और अर्थोपार्जन का पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नही था। फूले इसे चुनौती के रूप में स्वीकार करते थे। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए भारत का प्रथम विद्यालय खोला। उन्होंने विधवा विवाह तथा पुनर्वास के लिए विद्यालय स्थापित किया। वे शिक्षा को अच्छाई और बुराई के बीच फर्क करने का साधन मानते थे। उनका विचार था कि शिक्षा हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाती है शिक्षित व्यक्ति का शोषण संभव नही है। अतः हम यदि किसी वर्ग विशेष को समाज में मजबूत तथा बराबरी का स्थान दिलाना चाहते हैं तो उसे शिक्षित बनाने का प्रयास करना चाहिए।

ब्राह्मणवादी व्यवस्था में मिथ्या आडंबर अन्याय और शोषण था। इससे संघर्ष के लिए महात्मा फूले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उनका मानना था कि भारत में श्रमिक वर्ग की अधिसंख्या है। उन्हें ब्राह्मणवादी व्यवस्था से अलग हट कर वर्ण और जातिविहिन समता मूलक समाज के निर्माण की दिशा में बढना चाहिए। जो समानता, विवेकशीलता और न्याय पर आधारित हो 1873 ई० में स्थापित सत्यशोधक समाज का मुख्य उद्देश्य इसी प्रकार के समाज की स्थापना करना था। इस समाज का मूल सिद्धांत था कि सभी मनुष्य एक समान है। उन्हें किसी भी आधार पर श्रेष्ठ या निम्न की श्रेणी में नहीं डाला जा सकता है। समाज इस दिशा में सही सोंच और सत्य को प्रकाशित करना चाहता था। जो उन्हें उनके अधिकारों की जानकारी दे, सामाजिक समस्याओं से परिचय कराये तथा बुराईयों से लडने के लिए सूझप्रदान करे। फूले शूद्रों को शिक्षित करना चाहते थे ताकि उन्हें अपमान से छुटकारा मिल सके। [6] वे स्त्री बच्चों की शिक्षा और कृषि के तकनीकी के विकास पर काफी बल देते थे। समाज की साप्ताहिक बैठकों में समाज सुधार, विधवा–पुनर्विवाह, जनशिक्षा, स्वदेशी समानों से युक्त करना तथा विवाह प्रक्रिया का सरलीकरण और खर्च को न्यूनतम करना जैसे मुद्दों पर विमर्श किया जाता था।

फूले भारतीय समाज को वर्ग के रूप में देखते थे। शूद्रातिशूद्र समाज के उत्पादक समूह थे जिन्हें श्रम के बदले में अश्पृश्यता और अपमान मिलता था। समाज का कूलीन वर्ग जो श्रम का दोहन समाज के संसाधनों का शोषण करता था उसे आदर और प्रतिष्ठा प्राप्त था। इस प्रकार उन्होने निम्नजाति, शूद्रो और निम्नजातीय मुसलमानों को एक साथ लाने का प्रयास किया। उन्होंने इनके पारिश्रमिक को न्यायपूर्ण किये जाने के लिए प्रयास किया। इस प्रकार कई जाति, भाषा, क्षेत्र और धर्म के लोगों को एक दायरे में लाने का प्रयास किया गया। इनकी एक सामान्य विशेषता थी कि ये सभी सताये गये दलित लोग थे। इस समाज ने पुरानी विचारधारा कुलीन और निम्न तथा पवित्र और दूषित का परित्याग कर दिया। यह समाज समता प्रेम और भाईचारे पर आधारित था। यह अमानवीयता, आक्रमकता और अत्याचारी प्रवृत्ति का विरोध करता था। फूले विश्वजनीन भ्रातृभाव के समर्थक थे। वे कृत्रिम सामाजिक विभाजकों के विरोधी थे। वे सामाजिक विभाजक जैसे जातिवाद, वर्णवाद, भाषा, धर्म और राष्ट्रीयता के विरोधी थे। इस प्रकार विचारधारा के मामले में वे पश्चिमी उदारवादी चिन्तकों के करीब थे। [7]

1813 ई० के चार्टर एक्ट से भारत में शिक्षा के विकास के लिए एक लाख रूपये मिले। इससे मिशनरियों के द्वारा सरकारी विद्यालय बनाये गये। इन विद्यालयों में सभी वर्गों के अध्ययन के लिए रास्ते खुले इन विद्यालयों में ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विरोध था। ये विद्यालय शूद्रों, निम्नजाति शूद्रातिशूद्र और सभी जाति के स्त्रियों के लिए खोल दिया गया। कट्टर पंथी ब्राह्मणों ने इस प्रबंध का घोर विरोध किया। उनका विचाार था मिशनरी संचालित विद्यालय हिन्दू विरोधी वातावरण उत्पन्न करेंगे। फूले मिशनरी के विद्यालयों का समर्थन करते थे क्योंकि यह निम्नजाति, शूद्रों और महिलाओं के उत्थान के रास्ते खोलते थे।

ब्राह्मणवादी व्यवस्था में असमानता और अन्याय को नैतिक आधार प्रदान करने के लिए कर्मवाद का शास्त्रीय विधान दे दिया गया जिसमें वर्ण या जाति के बंधन में रहने पर अगले जन्म में ऊँचे वर्ण या जाति में जन्म लेने का आश्वासन था। फूले ने सांस्कृतिक क्रान्ति के रूप में अंग्रेजों की नई शिक्षा प्रणाली को देखा जो शिक्षितों में एक तार्किक व्यवहार और दृष्टि को जन्म देता है। इस विचार को लेकर सत्यशोधक समाज आगे की ओर बढा। उन्होने इस प्रकार शास्त्रों और उसकी स्थापनाओं पर प्रश्न खडा किया। [8] उनका मानना था कि स्मृतिग्रंथों ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को चार वर्णों का ढाँचा प्रदान किया। इस व्यवस्था को दैवी तथा शाश्वत बनाने का प्रयास किया गया। फूले इसे अन्यायपूर्ण प्रबंध मानते थे। मनुवादी व्यवस्था में सभी जाति की स्त्रियों को समाज में पुरूषों के समान स्थान प्राप्त नहीं था। ब्राह्मण स्त्रियों के साथ भी यह स्थिति थी।

स्वयं फूल ने एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र को गोद लिया था वे समाज में प्रत्येक वर्ग की महिलाओं के साथ समान व्यवहार करते थे। [9] फूले लैंगिक भेद–भाव का विरोध करते थे। उनका मानना था कि सामाजिक न्याय की प्राप्ति तभी संभव है जब परिवार में समता हो। इसलिए वे परिवार और विवाह में भी सुधार की आवश्यकता महसूस करते थे। वे उग्र सुधारवादी थे। वे ब्राह्मण और अब्राह्मणों के बीच सम्बन्ध को सुधारना चाहते थे। उन्होने शूद्रों को वर्ण व्यवस्था के अंतिम स्तर पर न रख कर कृषक समूह अथवा उत्पादक समूह का मानते थे। उन्होंने अनाथ बच्चों के लिए अनाथाश्रम खोले सुरक्षित प्रसव हेतु महिलाओं के लिए सुतिकागृह खोले। ऐसे पुरूष समाज सुधारकों की संख्या बहुत कम है जो नारीवादी अधिकारों के प्रति महात्मा फूले के समान दृष्टिकोण रखते हो। वे पति–पत्नी के बीच समानता का अधिकार चाहते थे। उन्होंने शूद्र स्त्रियों के लिए भारत में पहली बार विद्यालय खोला। उन दिनों ब्राह्मण विधवाओं के सर से बाल हटा दिये जाते थे। इसका उन्होंने तीव्र विरोध किया। उन्होंने हन्टर कमिशन के सम्मुख मांग रखा कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए बिना किसी भेद–भाव के प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया जाये।

आर्य और अनार्य सिद्धांत के तहत महात्मा फूले आर्यों को भारत में आक्रमणकारी मानते थे। अनार्य निम्न, शूद्र तथा शूद्रातिशूद्र थे जो मूलतः कृषि कार्य से जुडे थे। इन जातियों पर आर्यों ने अन्याय पूर्ण शर्तें और परंपराएँ लाद दी तथा उन्हें शास्त्रों के सिद्धान्तों के द्वारा नैतिक आधार प्रदान कर दिया गया। फूले ने इसका तार्किक विरोध किया जिसके कारण उन्हें महात्मा कहा जाता है। फूले की विचारधारा बताती है कि समाज का अल्पसंख्यक कुलीन वर्ग बहुसंख्यक निम्नवर्गों को अपने अधीन रखने तथा उनसे लाभ अर्जित करने हेतु उन पर निर्योग्यताएँ लाद देते हैं तथा उन्हें परंपरा और नियमों की बेडी में जकड़ देते हैं। फूले की शोषण सम्बन्धी विचारधारा की दुसरी विशेषता सांस्कृतिक कारकों को साथ लेकर चलती है। यह आर्थिक और राजनीतिक नहीं है। यद्दयपि यह सत्य है कि शोषण का निकट सम्बन्ध अर्थव्यवस्था और राजनीतिक तंत्र से है।

परंतु उपनिवेशवाद के आगमन के साथ इसका सम्बन्ध राजनीति और आर्थिक प्रबंध से अलग हो गया। ब्राह्मणों का सम्बन्ध पहले देशी राजाओं के साथ था। जिसे ब्राह्मणवादी शास्त्रीय विधानों के माध्यम से सुदृढ़ किया जाता था। अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही यह सम्बन्ध विच्छेद हो गया। अब आर्थिक और राजनीतिक भेद–भाव के टुटने अथवा परिवर्तित होने का दौर प्रारंभ हुआ लेकिन फिर भी सांस्कृतिक भेद–भाव पहले की तरह ही जारी रहा लेकिन फूले इस सिद्धांत के तहत सामाजिक न्याय की अवधारण को मजबूती से प्रस्तुत किया। इससे हिन्दू जाति व्यवस्था में विखण्डन हुआ। [10] इस सिद्धान्त का प्रयोग ई०वी०रामा स्वामी पेरियार तथा अम्बेदकर ने भी अपने आंदोलनों में किया। आगे बहुत से सुधारक ब्राह्मण हुए वे बिना प्रश्न किये सुधार कार्य कर रहे थे फूले ब्राह्मणवादी व्यवस्था का पूर्ण अंत चाहते थे। उनका मानना था ब्राह्मणवादी व्यवस्था असमानता का पोषक है। उन्होंने हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज में ब्राह्मण प्रभाव के विरोध में तार्किक विचारधारा और परिवर्तन प्रारंभ किया। ब्राह्मणवादी प्रभाव ने शूद्र अतिशूद्र तथा अश्पृश्यता के साथ अन्यायपूर्ण और अपमान जनक व्यवहार किया। [11] ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था सबों के लिए खुला था। इस कारण से फूले इसका समर्थन करते थे। यद्यपि आलोचकों का मानना था कि इस प्रकार फूले भारतीय संस्कृति और पंरपरा के विरोधी तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद का पक्षधर थे। परंतु फूले के पास वंचितों के लिए शिक्षा का अवसर उत्पन्न करने हेतु यह एकमात्र फलदायी उपाय था।

1. निष्कर्ष

निष्कर्षतः फूले साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोधी थे लेकिन अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था और ईसाई मिशनरियों की उदार दृष्टि का समर्थक भी थे। फूले भारत के प्रथम ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने वर्ण व्यवस्था और कर्मवाद के सिद्धान्त को पहली बार शोषक और शोषित वर्गों बीच अंतर स्थापित करने का सुरक्षित साधन के रूप में चिह्नित किया। मूल रूप से उन्होंने दलित और शोषित समाज को कृषि आधारित समूह के रूप में चिह्नित किया। इस क्रम में एक कथा जो दक्षिण भारत में प्रचलित है उसका उल्लेख किया गया। राजा बलि के आख्यान से प्रेरणा लेते हुए महात्मा फूले ने सम्पूर्ण किसान समाज को बलि नाम दे दिया। यह नाम शोषितों में एकता का द्योतक था। यह पूर्ण रूप से शोषकों से शोषितों की अलग पहचान दिलाता था। खास कर ग्रामीण समाज में निम्नजाति शूद्रों और अतिशूद्र जातियों को एक साथ आबद्ध करने तथा ग्रामीण समाज में हो रहे भोशण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए फूले ने यह प्रयास किया। उपनिवेशवादी व्यवस्था में भारतीय जनता के लिए नौकरशाही में स्थान प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण बात थी लेकिन इसके लिए आवश्यक योंग्यता तथा शिक्षा की आवश्यकता थी। सवर्ण और खास कर ब्राह्मण इस क्षेत्र में बाजी मार ले गये क्योंकि उनमें शुरू से ही शिक्षा की परंपरा थी।

लेकिन उन्होंने इस व्यवस्था को अपने प्रारंभिक परंपरावादी वर्णव्यवस्था से जोड लिया। इस वजह से सवर्णों को छोड़ कर अन्य कोई जाति सरकारी नौकरियों में अपना न्यायपूर्ण हिस्सेदारी नहीं निभा सकी। फूले ने इसका विरोध किया। सरकारी नौकरियों में प्रवेश तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु फूले ने जिस सामाजिक न्याय के लिए आंदोलन की नींव रखी वह बी० आर० अम्बेदकर, ई०वी० स्वामी नायकर पेरियार के आन्दोलनों के द्वारा आगे बढ़ाया गया। यही आंदोलन आगे चल कर बिहार में त्रिवेणी संघ के द्वारा शुरू किये गये आन्दोलन में भी प्रतिबिम्बित होता है।

संदर्भ

[1] मर्फी ग्रेट्चेन शैडोइंग द व्हाइट मैन बर्डेन यू०एस० इम्पीरियलिज्म एण्ड द प्रॉब्लेम ऑफ द कलर लाईन अमेरिका एण्ड द लौंग 19 सेन्चुरी न्यूयार्क युनिवर्सिटी प्रेस 2010 पृ 40–43
[2] महात्मा ज्योतिबा फूले : हिन्दी वेब दुनिया 31 जुलाई 2019
[3] परेक मोहित : आज तक 10 दिसम्बर 2019
[4] मुखर्जी रूद्रांश (1986) : कास्ट कान्फ्लिक्ट एण्ड आइडियोलॉजी : महात्मा ज्योतिबा फूले एण्ड लो कास्ट प्रोटेस्ट इन नाइन्टीन्थ सेन्चुरी वेस्टर्न इण्डिया : रोजालिन्ड ओ हैन्लॉन सोशल हिस्ट्री
[5] बाला रजनी (2012) : नवज्योति महात्मा ज्योतिबा फूले ए फॉरगॉटेन लिबरेटर, इंटरनेशनल जर्नल ऑव बेसिक एण्ड एडवान्स रिसर्च
[6] मणि ब्रज रंजन (2005) : डीब्राइननाइजिंग हिस्ट्री, मनोहर प्रका ान पृश्ठ 253
[7] देशपांडे जी0पी0 (2002) : सलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ ज्योतिबा फूले, लेफ्ट वर्ड प्रकाशन नई दिल्ली।
[8] मणि ब्रज रंजन (2005) : वही पृ0 457
[9] गैल ओमबेट (2004) ज्योतिबा फूले एण्ड द आइडियोलॉजी ऑफ सोशल रिवोल्युशन इन इण्डिया, क्रिटिकल क्वेस्ट प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 7–8
[10] बी0बी0 रावतः दलित मूवमेन्ट एट क्रॉस रोड्स (http://www.countersents.org/dalit-mroadatcrosshtml)
[11] मणि ब्रजरंजन : वही पृ0 255